

---

# Shri Bhavani Stava

---

## श्रीभवानीस्तवः

---

### Document Information



---

Text title : Bhavani Stava

File name : bhavAnIstavaH.itx

Category : devii, pArvatI, ApaTIkara

Location : doc\_devii

Author : ma. sa. ApaTIkara

Transliterated by : Mandar Mali aryavrutta gmail.com

Proofread by : Mandar Mali aryavrutta gmail.com

Description/comments : stotrapanchadashI by Shri M. S. Apatikar, Satara

Source : Sharada year 11, Vol 21-22, September 1970

Acknowledge-Permission: Pt. Vasant A. Gadgil, Sharada Gaurava Granthamala, 425 Sadashv  
Peth, Pune 30

Latest update : September 14, 2019

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose. Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

September 15, 2019

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीभवानीस्तवः



(पञ्चचामरम्)

मदान्ध-दैत्य-मर्दिनीं सुतीक्ष्ण-शस्त्र-धारिणीं  
नमज्जनानुकम्पिनीं समस्त-दुःख-हारिणीम् ।  
सुभक्त-सौख्य-कारिणीं भवाधिताप-नाशिनीं  
कृपा-कटाक्ष-वर्षिणीं नमामि तां सुहासिनीम् ॥ १ ॥

सदाशिव-प्रियां शिवां सदाऽशिवाशुनाशिनीं  
तपोबलेन तापसाधिराज-चित्त-हारिणीम् ।  
कृतान्त-कान्तकप्रियां सतामनन्तशान्तिदां  
निरन्तरं हृदन्तरे विचिन्तयामि तामुमाम् ॥ २ ॥

त्वदीयसेवको भवानि याचनां करोम्यहं  
मदीय-दुःख-नाशने त्वरस्व देवि सत्वरम् ।  
अनाथतां त्वया विना विनाशयेत् परः कथं  
नमस्करोमि पार्वति त्वदीयपादपङ्कजम् ॥ ३ ॥

प्रसीद हे शुभङ्करि प्रसीद हे दयाकरि  
प्रसीद हे सुरेश्वरि त्रिलोकशङ्करीश्वरि ।  
प्रसीद हे नटेश्वरि प्रसीद हे यशस्करि  
प्रसीद हे महेश्वरि प्रसीद हे भवेश्वरि ॥ ४ ॥

सुचन्दनाङ्ग-चर्चिते सुचारु-वस्त्र-मण्डिते  
सुवर्ण-भूषणाङ्किते सुरत्न-हार-भूषिते ।  
शिवे सुपुष्प-पूजिते सुगन्धि-धूप-नन्दिते ।  
समस्त-देव-वन्दिते नमाम्यहं सुरार्चिते ॥ ५ ॥

त्वमम्ब शम्भु-कामिनी त्वमम्ब दम्भ-हारिणी  
सुधाम्बु-कुम्भ-धारिणी दयाम्बुदाम्बु-वर्षिणी ।  
अराति-सिन्धु-शोषिणी समस्तक्लेशनाशिनी ।

त्वमम्ब शक्तिदायिनी मयि प्रसीद तारिणी ॥ ६ ॥

उमां हिमालयात्मजां नमामि विश्वमातरं  
शिवां च शक्तिदेवतां सदैव शत्रुनाशिनीम् ।  
स्वधर्मरक्षणे शिवे प्रयच्छ नो सशक्ततां  
स्वराष्ट्ररक्षणे भवानि देहि नो समर्थताम् ॥ ७ ॥

निशुम्भ-शुम्भ-राक्षसास्त्वया हता मदोद्धता  
असंस्कृता बलोद्धता विनाशमेव यापिताः ।  
त्वया भवानि शङ्करे सहस्रशश्च निर्जिता-  
स्तवैव सेवया शिवे शिवेन शत्रवो जिताः ॥ ८ ॥

इमं स्तवं मनोहरं सदैव यः पठेन्नरः  
प्रतिप्रभातमादरेण भक्तियुक्तचेतसा ।  
शिवा सदा दयामयी भवत्यरातिनाशिनी  
जयं यशः सुखं तथा तनोति तस्य शङ्करी ॥ ९ ॥

शक्तिदां भुक्तिदां शर्मदां मुक्तिदां  
सर्वदाम्बिकां विश्वधात्री भजे ।  
भक्तकामप्रदां विश्वनाथप्रियां  
सर्वदानन्ददां मङ्गलां प्रार्थये ॥ १० ॥

इति श्री आपटीकरविरचितः श्रीभवानीस्तवः सम्पूर्णः ।

Encoded and proofread by Mandar Mali aryavrutta gmail.com

---



*Shri Bhavani Stava*

pdf was typeset on September 15, 2019



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

